दिल्ली-हरिनगर। पुलिस कर्मियों के लिए 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शुक्ला दीदी,नेशनल कोऑर्डिनेटर,सेक्योरिटी सर्विसेस विंग, सी.डी.आर. शिव सिंह,इंडियन नेवी, सागर सिंह,आई.पी.एस.,एडिशनल डिप्युटी कमिश्नर ऑफ पुलिस, रिज़पाल सिंह,एस.एच.ओ., नरेश जी,एडिशनल एस.एच.ओ., उषा शर्मा,एडिशनल एस.एच.ओ. तथा अन्य।

खाता कहीं खटाई में तो नहीं...!

- ब्र.कु. स्नेहा,मुम्बई

गीता में कहा गया है, क्या लेकर आए थे, क्या लेकर जाना है। जो आज तुम्हारा है वो कल किसी और का था और आने वाले कल में किसी और का होगा। जिसे तुम अपना समझ रहे हो, बस यही प्रसन्नता ही तुम्हारे दु:खों का कारण है। ये बातें सौ फीसदी सही हैं, क्योंकि हमारा कर्मों का खाता पैसे के खाते से बिल्कुल अलग है, लेकिन कर्म करने में या करवाने में ये सारे सहयोगी हैं। हम बहुत कुछ भूल चुके हैं और भूल रहे हैं। उन भूलों को हम कैसे सुधार सकते हैं, कोई तो इसका इलाज ढूंढ़ते हैं।

जब किसी देश की सरकार किसी खाताधारक को खाता खुलवाने के लिए कहती है तो उसके लिए कई सारी औपचारिकताएँ पूरी करनी पड़ती हैं। जिसमें पहचान पत्र, परिचय पत्र तथा घर का पूरा पता चाहिए। जिसके आधार से खाता धारक की पूरी जानकारी सरकार के पास चली जाए। हम बैंक में खाता इसलिए नहीं खोलते हैं कि हमारा पैसा एक जगह रखा जाए तथा सुरक्षित रहे, बल्कि इसलिए खोलते हैं कि हमारे पास जो राशी है वो राशी देश हित में भी काम आए, सरकार की उसपर नज़र भी रहे और हम साफ-सुथरे भी रहें। आज लोग पैसा घर में रखते हैं, बैंक में नहीं रखते, कि सरकार तथा इनकम टैक्स पूछेगा कि इतना पैसा कहाँ से आया। तो इसका मतलब तो यही हुआ ना कि ये पैसा सफेद नहीं है, लेकिन कुछ गलत तरीके से आया है। यही स्थिति हमारे कर्मों की भी है।

अब आप सोचो कि यहाँ तो पहचान पत्र, परिचय पत्र, पासपोर्ट, वीज़ा आदि से खाता खुलवा सकते हैं, और खाते में पैसा जमा करवा सकते हैं और निकाल सकते हैं। लेकिन कर्मों के खाते के लिए किसी तरह का पहचान पत्र, परिचय पत्र, पासपोर्ट और वीज़ा काम नहीं आता। वहाँ पर कोई भी प्रति दिखाने से हमको माफी नहीं मिलती। **आज हम दुनिया में झूठ बोलकर, इधर-उधर की बातें करके सबकी वाहवाही लेते हैं। लेकिन परमात्मा की अदालत में तो हमारे कर्म ही हमारी असली गवाही देते हैं।** आप सोचिए ज़रा! जब भी हम कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिस कर्म के पीछे हमारा उद्देश्य बुरे भाव वाला है, तो वो हमारे खाते में जाकर जमा होता जाता है। आज पूरे विश्व की यही स्थिति है।

लोग अपने परिवार, अपने रिश्तेदार, अपनेपन के कारण अपने कर्मों के खाते को बिगाड़ते जा रहे हैं। कहते हैं कि परिवार चलाना है, बच्चों को पढ़ाना है, कुछ भी ऐसा करना है तो हमें झूठ तो बोलना पड़ता है ना। लेकिन आप सोचो ज़रा, जो आपने झूठ बोला, कपट किया, काला बाज़ारी की, तो उसको करते समय भी तो आपके मन में संकल्प आया होगा कि ये गलत है। ये गलती जितनी बार हम करते हैं, उतने दु:खी होते हैं। इसपर किसी शायर ने कहा भी है कि,

ज़िन्दगी मिली थी किसी के काम आने के लिए, लेकिन वक्त सारा बीत रहा है कागज़ के टुकड़े कमाने के लिए।

अरे, क्या करोगे इतना पैसा कमा कर, क्योंकि ना तो कफन में जेब है और ना ही कब्र में आलमिरा, और ये मौत के फरिश्ते तो रिश्वत भी नहीं लेते।।

आप कल्पना करिये कि अगर सरकार सारे नोटों का चलन बंद कर दे, और कह दे कि कोई भी पहचान पत्र दिखाने से आपको कुछ नहीं मिलेगा, तो उस समय आपकी स्थिति क्या होगी! अफरा-तफरी मच जायेगी, सोचेंगे क्या करें, कैसे करें, कैसे चलायें! ये स्थिति आने वाले समय में उत्पन्न होने ही वाली है। यदि उस समय आपने समझदारी से अपने पुण्य का खाता जमा किया होगा, दूसरों का भला सोचा होगा, हितकर सोचा होगा, कुछ कल्याणकारी सोचा होगा, तो वो किया गया पुण्य आपको अपनी जीविका चलाने के लिए कहीं न कहीं से इंतज़ाम ज़रूर कर देगा। यह हमारा अनुभव भी कहता है। यह अनुभव यह है कि हमलोग परमात्मा के समर्पित बच्चे हैं। परमात्मा ने हम सबसे वायदा किया है कि बच्चे, तुम किसी परिस्थिति, लोभ वश, मोह वश, अहंकार वश, काम विकार वश कोई ऐसा कर्म नहीं करो जिससे तुम्हारा खाता खराब हो। अगर तुम मेरे बारे में सोचो, मेरे लिए कर्म करो तो तुम्हारे लिए खाने का इंतज़ाम मैं करूंगा। सत्यता के साथ रहो, सत्यता के साथ जियो। अगर तुम इसपर चलते हो, तो कोई भी बड़े पहाड़ जैसी परिस्थिति भी तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकती। लेकिन आज हमारी बुद्धि इतनी ज़्यादा विकारों के वशीभूत है कि हम गलत काम कर ही जाते हैं। इसीलिए तो खाते को सुधारने के लिए हमें परमात्मा के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। अति अति अति आवश्यकता है।

हम सभी अष्ट सिद्धि और नौ निधियों के दाता हैं। नौ निधि अर्थात्, नौ सम्पत्ति, जिसमें समय, संकल्प, शक्ति, श्रेष्ठ कर्म, दुआयें, खुशी, पवित्रता, श्वास आदि आदि खज़ानें शामिल हैं। इन खज़ानों को हम आज कहाँ प्रयोग कर रहे हैं, इन विनाशी धन, इन विनाशी नाम मान शान के पीछे। इससे कितने विकर्म, पापकर्म का धन हमारे खाते में जमा हो रहा है, ये आप सोच भी नहीं सकते। हमें लगता है कि पैसा कमाने से, घर खरीदने से, बैंक बैलेंस बनाने से खुशी, शांति, पवित्रता आ जाएगी, लेकिन आज तक न ऐसा हुआ है और ना होगा। ये आएगी तो एक आधार से, और वो है श्रेष्ठ कर्म। क्योंकि श्रेष्ठ कर्म हमारे पुण्य के खाते को बढ़ाने का बहुत अच्छा ज़रिया है। तो डरो पापकर्म से, ताकि आने वाले समय में आपके पुण्य का खाता देखकर परमात्मा भी खुश हो जाये।

कपूरथला-पंजाब। 'सफल सुरक्षित जीवन यात्रा अभियान' के कार्यक्रम के दौरान ब्रिगेडियर शंकर प्रसाद, कर्नल देसाई, उनके परिवार तथा मिलिट्री ऑफिसर्स को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. शक्ति स्वरूप तथा अन्य।

अनुभव आत्मिक संयम के लिए अपनायें प्राकृतिक नियम

मुझे यह ज्ञान 1981 में प्राप्त हुआ। इससे पहले मैं भक्ति बहुत करता था। निर्जला उपवास भी करता था, लेकिन ना किसी देवी-देवता का दर्शन हुआ और ना ही कोई साक्षात्कार। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के पश्चात् हमें यह ज्ञान बहुत अच्छा लगा। ब्रह्माकुमारियाँ साक्षात देवी-देवियाँ दिखने लगीं लेकिन अनुभूति कुछ भी नहीं हुई। मैं साइंस एवं जीवशास्त्र का विद्यार्थी था, इसलिए यहाँ का ब्रह्मचर्य, पवित्रता, खान-पान की शुद्धता ने मुझे थोड़ा सा इस ज्ञान से विमुख करने का कार्य किया, क्योंकि मैं इसे कर नहीं सकता था। मैं नित्य प्रति ज्ञान भी सुनता, लेकिन धारणाएं नहीं होतीं।

- ब्र.कु. मानिक,नागपुर(महा.)

एक दिन घर में एक गुड़िया का खिलौना देखा। वह एक बिन्दु टोक पर खड़ी थी, कितना भी गिराओ, फिर भी खड़ी की खड़ी रहती थी। उस समय मेरे दिमाग की बत्ती जली। मैंने भृकुटि के बीच ज्योतिबिन्दु आत्मा में मन को एकाग्र किया और शरीर की सारी ग्रन्थियाँ, नस-नाड़ी को निहारते हुए संतुलन करने लगा। धीरे-धीरे मेरा शरीर हल्का और टेंशन फ्री होने लगा। आत्मा और शरीर का संयोग पानी के घटक (H2O) से याद आया। जिस प्रकार हाइड्रोजन जलता है और ऑक्सीज़न जलने में मदद करता है, दोनों के संयोग से पानी बनता है। ऐसे ही आत्मा स्वयं सुख शांति पवित्रता का स्वरूप है, लेकिन आत्मा को भूलकर देहभान में आने से विकर्म हुए। जिस प्रकार हाइड्रो ऑक्सीज़न फ्लेम की अग्नि से लोहा पिघल सकता है, तो मैं देह-अभिमान को क्यों नहीं छोड़ सकता।

मैंने आत्मचिंतन की गहराई में जाकर मन बुद्धि संस्कार का मिलान ऐटम के एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन से किया और देखा कि एटॉमिक स्ट्रक्चर में एलेक्ट्रॉन्स 2,8,16,32 की संख्या में सर्कल में घूमते हैं। लौकिक पढ़ाई में पिरेडिक टेबल से ज्ञात हुआ कि इलेक्ट्रॉन के घटने-बढ़ने से पदार्थ के गुण बदल जाते हैं। यही विधान आत्मा के मन के संकल्प के साथ है। जब सकारात्मक विचार से शुभ भावना और शुभ कामना की शक्ति बढ़ती है तो आत्मा 16 कला 32 गुण के आत्मिक स्ट्रक्चर के साथ स्मृति स्वरूप में रहकर यूरेनियम और रेडियम की तरह दिव्य प्रकाश चारो ओर फैला सकती है। ऐसा मैंने अनुभव किया। साथ ही मैंने यह भी देखा कि शिव बाबा के सप्तगुण मुझ चैतन्य आत्मा से परावर्तित होकर चारो ओर फैलते हैं। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि शिव बाबा ने स्वर्ग की स्थापना के कार्य में मुझे सहभागी बनाया। मैं इस ज्ञान के 35 साल के सफर में परिवार सहित पवित्र गृहस्थ व्यवहार में रहकर शिवबाबा के कार्य में सेवारत हूँ।

बुटवल-नेपाल। रूपन्देही जिला के जिला वन अधिकृत रामनाथ लामिछाने का स्वागत करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. कमला। साथ हैं ब्र.कु. नारायण।

फतेहाबाद-हरियाणा। सिटी वेलफेयर क्लब(निफा) द्वारा निर्मित टेलिफोन डायरेक्ट्री का विमोचन करते हुए ब्र.कु. सीता, निफा राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रित पाल पन्नू, ब्र.कु. मदन तथा अन्य गणमान्य जन।